Department of Political Science
D.B. College Jaynagar
By- A.K. Yadav
(Asstt. Prof. Gptt)

B.A PART-III - Pub.Ad.

Date- 15/09/2020

Lecture No. 14 & 15

भारत में लोक प्रशासन के विकास का स्वरूप
(Nature of Development of Pub. Ad. in India)

भारत में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शासनकाल तथा 1858 के अधिनियम के बाद क्राउन के शासन काल में इंग्लैण्ड के बहुत से विद्वानों ने भारत की प्रशासनिक व्यवस्था पर विभिन्न ग्रन्थों की रचना की है तथा उसके कार्यों की समीक्षा भी की है। वास्तविकता तो यह है कि भारत में लोक प्रशासन के अध्ययन एवं अध्यापन का प्रारंभ स्थानीय स्वायत्त शासन व्यवस्था के समय में अध्ययन-अध्यापन से प्रारंभ होता है। ब्रिटिश शासन काल में प्रशासन के उच्च स्तर के प्रशासन की जानकारी अंग्रेजों द्वारा नहीं दी जाती थी। इसलिए लोक प्रशासन के अध्ययन की सुविधा प्रायः नगण्य थी। भारत में अंग्रेजी काल में लोक प्रशासन से सम्बन्धित पुस्तकें लिखी गई। वे अधिकतम लोक सेवा के अधिकारियों द्वारा ही लिखी गई। जैसे- ब्लण्ट ने I.C.S पर पुस्तक लिखी। ओस मैले की इण्डियन सिविल सर्विस पर पुस्तक, डी. एन. बनर्जी की पुस्तक ~~ईअरी~~ Early Administrative system of the East India company in Bengal आदि प्रमुख थी। पाठ्यक्रम के रूप में भारत में सबसे पहले 1924 ई० में लखनऊ विश्व विद्यालय ने राजनीतिशास्त्र के P.G. पाठ्यक्रम में लोक प्रशासन को एक प्रश्नपत्र के रूप में सम्मलित किया। इस पाठ्यक्रम के प्रथम विभागाध्यक्ष डॉ० के. एन० मेनन थे। डिप्लोमा पाठ्यक्रम के रूप में भारत में सबसे पहले मद्रास विश्व विद्यालय में 1937 ई० लोक प्रशासन का डिप्लोमा पाठ्यक्रम प्रारंभ हुआ। 1938 ई० में इलाहाबाद विश्व विद्यालय में भी स्थानीय लोक प्रशासन का डिप्लोमा पाठ्यक्रम डॉ० बेनीप्रसाद की विभागाध्यक्षता में शुरु हुआ जिसको पूरी तरह क्रियान्वित डॉ० महावीर प्रसाद शर्मा ने किया। जिन्हें आधुनिक भारतीय लोक प्रशासन का जनक कहा जाता है। लखनऊ विश्वविद्यालय में डिप्लोमा पाठ्यक्रम का संचालन राजनीति विज्ञान विभाग ने प्रारंभ किया। धीरे-धीरे पटना विश्वविद्यालय, उस्मानिया व अलीगढ़ विश्वविद्यालय में भी लोक प्रशासन में डिप्लोमा पाठ्यक्रम आरंभ किये गए। पटना विश्व विद्यालय में 1954 से लोक प्रशासन में डिप्लोमा पाठ्यक्रम की शुरुआत हुई।

Scanned with CamScanner

लोक प्रशासन का पाठ्यक्रम एक स्वतंत्र विभाग के अधीन सबसे पहले नागपुर विश्व विद्यालय में सन 1949 ई० में स्थापित हुआ। भारत में सबसे पहले लोक प्रशासन विभाग के स्वतंत्र विभागाध्यक्ष का श्रेय डॉ० महावीर प्रसाद शर्मा को जाता है। सन 1959 ई० में लखनऊ विश्वविद्यालय में भी लोक प्रशासन के स्वतंत्र विभाग की स्थापना डॉ० बी० के० मेनन की अध्यक्षता में हुआ। तथा इस विभाग ने P.G. की उपाधि प्रदान करना शुरू किया।

भारत में लोक प्रशासन के अध्ययन-अध्यापन में अमेरिकी विद्वान डॉ० पॉल एपलबी का महत्वपूर्ण योगदान है। डॉ० पॉल एपलबी भारत में प्रशासनिक सुधारों हेतु भारत सरकार के निवेदन पर दो बार भारत आये। जिन्होंने लोक प्रशासन के अध्ययन-अध्यापन पर विशेष बल दिया। डॉ० एपलबी की सिफारिशों के आधार पर सन 1954 ई० में इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन की स्थापना नई दिल्ली में हुई। यह एक स्वायत्त शासी अराजनीतिक संस्था है जिसका उद्देश्य प्रशासन से सम्बन्धित अनुसंधान एवं प्रायोगिक कार्य करना है। यह संस्थान भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के अधीन कार्य करता है। तथा इसका मुख्य पत्र इण्डियन जर्नल ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन देश में जनसम्पर्क एवं सूचना प्रसारण का प्रशस्त माध्यम बना हुआ है। इसके साथ ही अगले साल वर्ष 1955 में इण्डियन स्कूल ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन की स्थापना भी नई दिल्ली में की गई। हालांकि यह संस्थान अवबंद है।

भारत सरकार के द्वारा सन 1947 में प्रशासनिक अधिकारियों (सरकारी एवं गैर सरकारी दोनों) को प्रशासन सम्बन्धी व्यवसायिक प्रशिक्षण हेतु हैदराबाद में 'एडमिनिस्ट्रेटिव स्टॉफ कॉलेज' की स्थापना की गई है। सन 1949 ई० में National Academy of Administration की स्थापना हुई। भारत सरकार के द्वारा उच्च पदाधिकारियों के प्रशिक्षण हेतु किया गया है। सन 1969 में स्थापित Indian Public Administration Association भारत की मात्र एक ऐसी संस्था है जो देश भर के प्रशासन से सम्बन्धित अध्येताओं व विद्वानों को एक मंच पर लाने तथा विचार-गोष्ठियाँ आयोजित कराने का कार्य सम्पन्न करती है। इस संघ ने सन 1990 में Journal of Administrative Science का प्रकाशन आरंभ कर लोक प्रशासन के क्षेत्र में उच्च स्तरीय शोध परक सामग्री का प्रकाशन आरंभ किया है।

— End —

Scanned with CamScanner